महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द

२१ दिसंबर, २०१२

"दूसरे विश्वयुध्द के अंत के बाद, तीसरी विश्वव्यापी लड़ाई छिड़ेगी जिसमें सबकुछ तय हो जायेगा । इसमें बिल्कुल नये किस्म के हथियारों का ईस्तेमल होगा, एक ही दिन में पिछले सभी युध्दों से ज्यादा लोग मारे जायेगें । मेरे बच्चों, तुम इस युध्द को नही झेलोगे, तुम्हारे बाद की पीढ़ी भी इसे नही झेलेगी परन्तु उसके बाद की पीढ़ी को अवश्य ही इसका अनुभव होगा" ।

(स्टॉमबर्गर, बवेरिया, १९वी शताब्दी)

ये कथन १९वी शताब्दी के महान बवेरियाई भविष्य वक्ता 'स्टॉम बर्गर' का हैं और विनाश के जिस समय का यंहा जिक्र किया गया हैं वो समय अब चल रहा हैं । १९९० से २०१० तक का ये समय उस तीसरी पीढ़ी का हैं जिसे अपने समय में स्टॉम बर्गर ने बताया हैं । तीसरे विश्वयुध्द की ये साफ साफ भविष्यवाणी हैं ।

'नेस्ट्राडॉमस' ने भी कहा था, "धूमकेतु के गुजरने के बाद तीसरा क्राईस्ट विरोधी पैदा होगा जो सत्ताईस वर्षो तक युध्द करता रहेगा फिर उसका जल्दी ही अंत हो जायेगा परन्तु दुनियाँ में उसके कारण बहुत तबाही फैलेगी । नास्तिकों को मार दिया जायेगा, बंदी बना लिया जायेगा और देश से निकाल दिया जायेगा"। जानकार लोग कहते हैं कि नेस्ट्राडॉमस के अनुसार 'हिटलर' दूसरा क्राईस्ट विरोधी था । इसी के चलते वर्तमान समय ही वो समय हैं जब किसी तीसरे क्राईस्ट विरोधी का जन्म होने वाला हैं अथवा वो पैदा हो चुका हैं । इस तीसरे क्राइस्ट विरोधी के रुप में पश्चिमी जगत 'ओसामा बिन लादेन' को फ्रेम करने में लगा हैं ।

इसके अलावा ईसाई धर्म ग्रन्थ 'बाईबल' में भी कई भविष्यवाणियों का जिक्र हैं और उसी में हिटलर और नाजियों के उत्थान और पतन की भविष्यवाणियाँ लिखी हुई हैं । ईन्ही भविष्यवाणियों की एक अलग किताब बनाई गई हैं जिसका नाम 'बुक ऑफ रिवॉल्युशनरी' हैं । इसमें भी महाविनाश और महाप्रलय का उल्लेख किया गया हैं ।

आजकल पश्चिमी मिडिया और ज्योतिष जगत में महाप्रलय की बात अथवा दुनियाँ के समाप्त हो जाने की बातें चर्चा का विषय बनी हुई हैं । नेस्ट्राडॉमस, जैकब बर्कहार्ड, हेनरिक हाईना और मैडम ब्लॉवटस्की ईत्यादि अपने समय के एसे पश्चिमी ज्योतिष विद्वान हुऐ हैं जिन्हौने दुनिया में महाविनाश की भविष्यवाणियाँ की हैं । ये समय अब आ पहुचाँ हैं, एसा पश्चिमी विद्वान मानने लगे हैं ।

अब कई प्रश्न उभरने लगे हैं । क्या महाप्रलय आन पहुची हैं ? क्या तीसरा विश्वयुध्द होगा ? क्या वर्तमान में विश्व में चल रही गतिविधयाँ विश्वयुध्द की बुनियाद बना रही है ? क्या आतंकवाद का बढ़ता साया इसका कारण बनेगा ? क्या 'ओसामा बिन लादेन' तीसरा क्राईस्ट विरोधी हैं ? ११ सितंबर की वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की आतंकवादी घटना ने दुनियाँ को आशंकाओं और भय से भर दिया हैं । कंहि एसा ना हो कि फिर कोई बड़ी आतंकवादी घटना घटे और अमरिका फिर किसी देश पर हमला बोल दे, जैसे उसने ११ सितंबर की वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की आतंकवादी घटना के जवाब में अफगानिस्तान और इराक पर हमला कर दिया था । हालाकि तब भी अमरिका को सयुंक्तराष्ट्र में समर्थन जुटाने में बड़ी दिक्कत हुई थी और काफी मशक्कत के बाद अपने हमले को सही ठहराने में सफल हुआ था । परन्तु अबकि बार अगर एसा ना हुआ तो ? अगर कोई बड़ी अतंकवादी घटना होती हैं और अमरिका ने फिर किसी देश पर हमला कर दिया और इस बार कोई महाशक्ति उस देश के समर्थन में मैदान में आ गई तो क्या होगा ? फिर तो विश्वयुध्द तय हैं । अगर तीसरा विश्वयुध्द हुआ तो परमाणु हथियारों का ईस्तेमाल नही होगा एसी गॉरन्टी कौन करेगा । अगर परमाणु हथियारों का ईस्तेमाल हुआ तो मरने वालों की गिनती कौन करेगा ।

इस खोज और विश्लेषण के स्वरुप पश्चिमी विद्वानो ने दुनियाँ के समाप्त होने के अथवा एसा कहे कि किसी महा अनहोनी के होने के कुछ और सबूत जुटा लिये हैं और २१ दिसंबर २०१२ के दिन को निश्चित भी कर लिया हैं । इसके लिये वे विलुप्त हो गई 'माया' सभ्यता के जटील कैलेडंर, चीनी भविष्यवाणियों की किताब 'ई-चींग' की बात करते हैं और वैज्ञानिक पध्दती से ग्रहों के संचार पथ की महागणना करते हैं ।

माया सभ्यता का एक पिरामिड सैन्ट्रल अमेरिका के पेन्नीनसुला के जंगलो में स्थित हैं । इस पिरामिड को देखने २१ मार्च और २२ सिंतबर को हजारों पर्यटक जाते हैं । २१ मार्च को सबसे छोटा दिन और २२ सिंतबर को सबसे बड़ा दिन होता हैं । इन दिनो में इस पिरामिड की सिढ़ीयो पर सूर्यास्त के समय ध ूप-छाँव के मिश्रण से एक सर्प की आकृति बनती हैं । ये सर्प आकाश से उतरता जान पड़ता हैं । ये पिरामिड और माया सभ्यता की बाकि बची चार पुस्तकें पाँच हजार वर्षो के एक कैलेडंर को प्रस्तुत करती हैं । जोकि २१ दिंसबर २०१२ को समाप्त हो जाता हैं । इस कैलेडंर की समाप्ती के साथ माया सभ्यता की बाकि बची चार पुस्तकों में चौथी और अंतिम पुस्तक के आखिर में एक चित्र बना हुआ हैं जिसमें पाताल लोक का एक दैत्य, पृथ्वी की एकदेवी और आकाश का एक देवता मिलकर पृथ्वी को पानी में डुबो रहे हैं । इसीसे पश्चिमी विद्वानों ने नतिजा निकाला हैं कि २१ मार्च और २२ सिंतबर को पिरामिड की सिढ़ीयों पर उतरते हुऐ सर्प की बनने वाली आकृति दर्शाती हैं कि कभी ना कभी आकाश से तबाही बर्पा होगी । २१ दिसंबर, २०१२ को समाप्त होता पाँच हजार वर्षो का कैलेडंर और अंत में पुस्तक में बना चित्र, जिसमें पृथ्वी को पानी में डुबोया रहा हैं । दर्शाते हैं कि महाप्रलय आन पहुची हैं ।

हालाकि इसे इस तरह भी विश्लेषित किया जा सकता हैं कि माया सभ्यता के लोगों ने अभी और कैलेन्डर को बनाना था परन्तु उन्हे मौका नही मिला । जैसे एक समय एसा आया था कि हमे सन् २००० के बाद कम्प्युटर में गणनाऐं भरनी थी जिससे Y2K की समस्या खड़ी हो गई थी परन्तु हमे मौका मिला और हमने और गणनाऐं कम्प्युटर में भरली । पृथ्वी को डुबाने वाले माया सभ्यता के चित्र को हम इस नजरिये से भी देख सकते हैं कि माया के लोग ये दर्शाना चाहते थे कि पृथ्वी को तीन तरफ से खतरा सदा रहता हैं ।

अब बात ई-चींग किताब की । जब कोई ई-चींग से अपना भविष्य जानने के लिये किसी ज्योतिषि के पास जाता हैं तो उसे तीन सिक्के दिये जाते हैं । जब सिक्के उछाले जाते हैं तो वे चित-पट अथवा हेड-टेल के रुप में जमीन पर गिरते हैं । जब अधिकतर सिक्के चित अथवा हेड के रुप में गिरते हैं ज्योतिषि एक कागज पर एक सीधी रेखा बनाता हैं । सिक्के जब पट अथवा टेल के रुप में जमीन पर गिरते हैं तो ज्योतिषि एक टूटी फूटी रेखा कागज पर बनाता हैं । इस तरह सिक्के छह बार उछाले जाते हैं और ज्योतिषि छह बार रेखाऐं बनाता हैं जिससे अंत में एक हैक्सागॉन अथवा षटकोण बन जाता हैं । उसी तरह का हैक्सागॉन ई-चींग किताब में तलाश कर उसके नीचे लिखा भविष्य कथन सिक्के उछालने वाले को बता दिया जाता हैं । इस तरह इस ई-चींग किताब में १६४ प्रकार के षटकोण होते हैं । छह बार सिक्के उछालने से १६४ प्रकार के षटकोणों से अधिक कोई और षटकोण नही बन सकता हैं ।

Bhagyadisha Astrological Research Center - Phone : 02512730080 Mobile : 9890574444.
Disha complex 2nd floor, Kewalkunj apt. 17 sec. U.M.C. road Ulhasnagar 421003. Thane, Mumbai.

महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द

२१ दिसंबर, २०१२

अब एक पश्चिमी विद्वान ने किताब के सभी १६४ षटकोणों को एक ग्राफ के रुप में बनाया है । जबसे ये किताब बनी हैं जोकि करीब इसा पूर्व १००० बी सी हैं, तब से इसके सभी षटकोणों को समय की एक रेखा में क्रमानुसार रखा गया हैं। जंहा जंहा ये षटकोण अशुभ फलादेश का संकेत करते हैं वंहा वंहा इस ग्राफ की रेखायें नीचे की ओर झुकती हैं और जंहा जंहा षटकोण शुभ फलादेश का संकेत करते हैं वंहा वंहा ग्राफ की रेखायें उपर की ओर उठती हैं । जैसे क्रिकेट के गेम में ग्राफ दर्शाया जाता हैं । आश्चर्य की बात ये हैं कि जंहा जंहा ग्राफ की रेखायें समय की रेखा पर नीचे झुकती हैं उस उस समय पर पृथ्वी पर अशुभ घटनायें हुई थी और जंहा जंहा ग्राफ की रेखायें समय की रेखा पर उपर उठती हैं वंहा वंहा पृथ्वी पर शुभ घटनायें हुई थी और अंत में समय की ये रेखाऐं और ई-चींग के षटकोण २१ दिसंबर, २०१२ को समाप्त हो गये । पश्चिमी विद्वान इसमें सोच रहे हैं, क्या ये माया सभ्यता के अनुसार २१ दिसंबर, २०१२ के विनाश की घोषणा हैं ? जब सभी ओर से निराशाजनक संकेत मिलने लगे तो निराशाओं की आपस में संगति भी बैठने लगती हैं ।

बहरहाल इस ग्राफ में जो असगंति हैं वो ये कि १००० बीसी से लेकर सन् २००० तक किस तरह १६४ षटकोणों को विभाजित किया जा सकता हैं कि वो २१ दिसबर, २०१२ के दिन को दर्शाने लगे । ३००० वर्षो में कितने दिन होते हैं और १६४ षटकोणों में कितनी रेखाऐं होगी जो एक-एक दिन को दर्शा सकती हैं ?

पश्चिमी वैज्ञानिको ने भी २१ दिसबरं, २०१२ को ग्रहों की स्थिति का पता लगाया हैं और बताया हैं कि ग्रह स्थिति ज्यादा आशाजनक नही हैं । अपनी परिक्रमा पथ के दौरान एक समय एसा आता हैं जब सूर्य आकाशगंगा के बीचोंबीच आ जाता हैं और इससे सूर्य में बदलाव आने लगते हैं । एसे भी वैज्ञानिको ने आकाशगंगा के बीच में कंहि ब्लैक होल ढूंढ निकाला है । आजकल वैज्ञानिक एसा मानते हैं कि ये ब्लैक होल आकाशगंगा के बीचोंबीच आ गया हैं । सूर्य पर आकाशगंगा के ध्रुवों का और ब्लैक होल का जो प्रभाव पड़ेगा उससे सूर्य पर तुफान उठ खड़े होगें । उसमें से प्लाज्मा की तरंगे उठेगी और हो सकता हैं की अब प्लाज्मा के तुफान ही उठ खड़े हो और सूर्य में गर्मी बढ़ने लगे । पृथ्वी तो पुर्णरुप से सूर्य पर ही निर्भर हैं । एसे में जो कुछ सूर्य पर होगा उसका खमियाजा पृथ्वी को भुगतना होगा । पृथ्वी शायद सहन कर भी लें, क्योकि पृथ्वी अरबो वर्षो से ये सब सहन करती रही हैं परन्तु मानव जाति का क्या होगा ? प्लाज्मा के तुफान पृथ्वी की ओजोन परत को नष्ट कर सकते हैं, सूर्य की बढ़ती गरमी पृथ्वी के पानी को सुखाकर रख सकती हैं । बहरहाल वैज्ञानिक और भी आगे की सोच रहे हैं । अगर ब्लैक होल और आकाशगंगा के ध्रुवों की चुबंकिय शक्ति सूर्य को पार करके पृथ्वी को प्रभावित करने लगे तो क्या होगा ? ऐसे में पृथ्वी के नार्थ पोल और साउथ पोल इसे ग्रहण करने लगेंगे और वे अपनी स्थिति बदल सकते हैं । सोचिये कि अगर पृथ्वी के नार्थ पोल और साउथ पोल अपनी स्थिति बदल लें और अपनी जगह से हटकर सैकड़ो किलोमीटर कंहि स्थित हो जाये तो परिणाम बहुत भंयकर होगे । पृथ्वी के दोनो पोलों की बर्फ पलक झपकते ही पिघल जायेगी और पृथ्वी पर असाधारण बाढ़ प्रकट हो जायेगी और सभी जगह पानी ही पानी होगा । ये पोल फिर जंहा स्थित होगें वंहा बर्फ जमने लगेगी । अब ये जगह भारत भी हो सकती हैं अथाव कहि भी हो सकती हैं । वैज्ञानिक कहते हैं एसा प्रत्येक छब्बीस हजार वर्षो में होता रहा हैं । अब फिर होने वाला हैं ।

पश्चिमी लोग भले ही ग्रह स्थितियों की बातें करें परन्तु उनका डर मूल रुप से तीसरे विश्वयुध्द का ही हैं जो उनके अपने किये कर्मो से प्रकट होने वाला हैं । बाकि सब बेकार की बातें हैं । उनके किये सारे उल्लेखों में कमी इस बात की हैं कि इनमें कोई सिंध्दांत नही हैं और केवल उल्लेखों से बात नही बनने वाली हैं । कोई सिध्दांत पेश किया जाना चाहिये । सूर्य किस जगह आकाशगंगा के बीच में आने वाला हैं इसे सूर्य की गति और आकाश गंगा की बारह राशियों से बताया जाना चाहिये ।

बहुत पहले जब नेस्ट्राडॉमस की किताबें छपी थी तो उसमें सन् ७००० में दुनियाँ के समाप्त होने की भविष्यवाणी की गई थी परन्तु अब पश्चिमी विद्वान कहते हैं कि महाप्रलय अभी होने वाली हैं । इसके लिये वे नेस्ट्राडॉमस की भविष्यवाणियो को तोड़मरोड़ कर पेश करने से भी नही चूकते हैं । वे पोप को अर्धचन्द्र के साथ दिखाते हैं और दर्शाते हैं कि इसी अर्धचन्द्र की ओर से एक मानव भेड़िया, पोप की तरफ बढ़ रहा हैं । इससे वे कहते हैं कि उनका धर्म स्थान 'वेटिकन सिटी' और धर्म गुरु पोप खतरे में हैं और ये कि नेस्ट्राडॉमस की भविष्यवाणी अनुसार एशिया से हरे और नीले रंग में कोई तीसरा क्राइस्ट विरोधी उत्पन्न होगा और इसाईयत के लिये खतरा बन जायेगा ।

वे लोग नेस्ट्राडॉमस का जिक्र करते हैं और कहते हैं कि वृश्चिक और धनु राशि के बीच में विषुवत रेखा अथवा इक्वेटर का केन्द्रबिन्दु हैं जंहा सूर्य आयेगा और कुछ अशुभ होगा । यंही पर वे एक तेरहवीं अशुभ राशि 'आफ्युशस' का भी उल्लेख करते हैं जोकि सर्प के आकार का संकेत करती हैं । परन्तु २१ दिसंबर तक तो सूर्य, धनु राशि के पाँच अशों को ही पार करता हैं फिर २१ दिसंबर को वो कंहा से इस केन्द्रबिन्दु के आसपास होगा ?

दरअसल ०८ दिसंबर, २००६ को अयनांश बदल जाता हैं । इस दिन अयंनाश २४ अशों को पार कर लेगा । ये एक महत्वपुर्ण खगोलीय घटना हैं । इससे ज्योतिषिय गणनाऐं बदल जायेगी । अब तक जो कंम्प्युटर २४ अयनांश को ध्यान में रखकर गणनाऐं करते थे वे अब गणनाऐं करने के लिये २५ वे अंश से गणनाऐं करेगें । इसके लिये उन्हे फिरसे निर्देशित किया जायेगा । बहरहाल इससे ग्रहों की गति पर कोई असर नही होने वाला हैं । सूर्य सदा से ही जैसे २१ दिसंबर के आसपास धनु राशि के पाँच अंशो को पार करता हैं वैसे ही २१ दिसबर, २०१२ को भी पार करेगा ।

अब पश्चिमी ज्योतिषि सदा से ही सायन ग्रहों की गणना करते हैं अर्थात वे ग्रह स्पष्ट में अयनांश मिलाकर गणनाऐं करते हैं और इससे २१ दिसबर, २०१२ को सूर्य २४ अंश और आगे बढ़ जाता हैं । भारतीय पध्दती निरयन ग्रहों की हैं अर्थात ग्रह स्पष्ट में अयनांश नही मिलाया जाता हैं बल्कि १२ राशियों के अयन से ही इसे घटा दिया जाता हैं । २१ दिसंबर, २०१२ को इस पध्दती से भी सूर्य, धनु राशि के पाँच अंशो को ही पार करता हैं ।

शायद वे लोग यंहा कह सकते हैं कि वे सारे सौर परिवार की ही बात कर रहे हैं । जिसमें सूर्य अपने सारे परिवार समेत गतिशील रहता हैं अर्थात नवग्रह भी उसके साथ साथ गतिशील रहते हैं । हमारी आकाशगंगा के बहुचर्चित नवग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं और सूर्य भी किसी और केन्द्रबिन्दु की परिक्रमा करता हैं । भारतीय सस्कृति अनुसार हमारा सूर्य, ध्रुव तारे की परिक्रमा करता हैं परन्तु पश्चिमी ज्योतिषियों के अनुसार सूर्य किस ग्रह की परिक्रमा करता हैं मुझे नही पता । परन्तु २१ दिसबर, २०१२ के संदर्भ में अगर वे एसा भी कह रहे हैं तो भी उन्हे सूर्य की गति और राशिचक्र को स्पष्ट करना होगा ।

थोड़ी उलझन हो गई हैं । दो दो सूर्यो की बात हो रही हैं । इसे थोड़ा समझ लें । दरअसल कुण्डली में हम जिस सूर्य की बात करते हैं वो असल

महाप्रलय बनाम धर्मयुध्द

२१ दिसंबर, २०१२

में पृथ्वी हैं । इसलिये कि पृथ्वी ही ३६५ दिन में सूर्य का एक चक्कर लगा लेती हैं और ऋतुऐं, मास और वर्ष होते हैं । तीस दिनों का मास पृथ्वी का एक राशि में संचार हैं और बारह राशियों में बारह मासों का एक वर्ष पृथ्वी के द्वारा सूर्य का एक चक्कर हैं । इसे सूर्य नाम क्यों दिया गया ये भारतीय ज्योतिष में एक रहस्य हैं जो सदा से विद्यमान हैं । इसे भारतीय ज्योतिष विद्वानों को ज्योतिष सीखने वाले विद्यार्थीयों के लिये सुलझाना चाहिये । कुछ और भी रहस्य हैं । जैसे विशोतरी दशा में ग्रहों के वर्ष कैसे निर्धारित हुऐ हैं ? भारतीय ज्योतिष का बहुचर्चित त्रिकोण सिध्दात क्या हैं ? ध्रुव तारे का क्या रहस्य हैं ? सूर्य के रहस्य क्या हैं ?

अब समय आ गया हैं जब भारतीय ज्योतिष के रहस्य उजागर होने चाहिये ताकि पश्चिमी विद्वान जब ग्रहों की अपने मनमाने ढंग से व्याख्या करते हैं तो भारतीय ज्योतिषि भी उसपर कोई उचित व्याख्या कर सके । अभी तक हम कुण्डली और ग्रहों की साधारण भविष्यवाणियाँ करते आये हैं परन्तु जब पृथ्वी ज्योतिष की बात होती हैं तो हम चुप हो जाते हैं इसलिये कि विश्व स्तर की भविष्यवाणियाँ करने के लिये ज्योतिष सिध्दात का हमे पता ही नही हैं । बहरहाल ब्रह्माण्ड में सबकुछ चलायमान हैं तो सूर्य भी अपने सौर परिवार के साथ चलायमान हैं और उसकी गति और परिक्रमा का ज्ञान हमे विश्वस्तर की भविष्यवाणियाँ करने की योग्यता दे सकता हैं । इसपर अनुसंधान होना चाहिये ।

जो भी हो पश्चिमी विद्वान महाप्रलय का जो हौव्वा खड़ा कर रहे हैं उसके पीछे तीसरे विश्वयुध्द का खतरा ही हैं । जो वे अब मेहसूस करने लगे हैं । ये सब उनकी अपनी ही करनी का फल हैं । खाड़ी देशों से जो दशकों तक उन्हौने तेल का दोहन किया हैं और जिससे वे निरंतर साधन सपंन्न और शक्तिशाली होते रहे हैं । उसकी कीमत चुकाने का अब समय आ गया हैं परन्तु तेलदोहन से अपना मोह वे लोग छोड़ नही सकते हैं । इसलिये कि इससे दशको से होता लाभ और उनके शुभचिंतको के सधते हितों की वे लोग अनदेखी नही कर सकते हैं । कुछ एसा लगता हैं कि लालच से भरी मक्खी ने गुड़ की लालच में अपने पंख भी गुड़ में फंसा लिये हैं । तेलदोहन के चक्कर में कुछ एसा ही हाल इन पश्चिमी देशों का हुआ हैं और अब मुश्किलें बढ़ने लगी हैं । उसपर अगर वे लोग तेलदोहन से अपना हाथ खींच भी ले तो कोई और देश तेलदोहन पर आधिपात्य स्थापित कर लेगा और शक्तिशाली होने लगेगा । बहरहाल तेल की ये राजनिति अब विश्वस्तर पर होने लगी हैं ।

अब कई दूसरे देश भी उस तेल दोहन में अपनी हिस्सेदारी चाहते हैं और इसके लिये विभिन्न तरीकों से राजनिति कर रहे हैं । इस तरह ये तेल दोहन अब विश्व राजनिति का रुप धारण कर चुका हैं । ये सब देखकर खाड़ी देशों की जनता सकते में हैं और आतंकवाद के रुप में उनका क्रोध प्रकट हो रहा हैं । यही आतंकवाद अब जेहाद के रुप में धर्मयुध्द का आकार लेता जा रहा हैं ।

पश्चिमी देश राजनिति का सामना तो कर सकते हैं परन्तु धर्मयुध्द से दो चार होना उनके लिये मुश्किल होता जा रहा हैं । मुस्लिम कटटरपथिंयों के आत्मघाती हमले निरंतर तीव्र होते जा रहे हैं । तेल की हिस्सेदारी चाहने वाले दूसरे देश कंहि इसे शह देते हैं तो कंहि इसे गुप्त रुप से सहायता भी देते हैं । ११ सिंतबर की वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर की घटना ने पश्चिमी जगत को सकते में डाल दिया हैं और वे अब पैतरा बदलकर धर्मयुध्द का सामना धर्मयुध्द से करना चाहते हैं ।

वे समझने लगे हैं कि अब अगर कोई आतंकवादी घटना घटी तो किसी देश पर हमला करके वंहा अपनी पिछलग्गू सत्ता बनाना आसान नही होगा । कोई भी महाशक्तिशाली देश उसके बचाव के लिये सामने आ सकता हैं और फिर विश्वयुध्द छिड़ने में देर नही लगेगी । इसी के चलते उन्हे अब अपने संत, पोप, भविष्यवक्ता और इसाई धर्म के ठेकेदारों की याद आने लगी हैं ।

वे धर्मयुध्द का सामना धर्मयुध्द से करने की रणनिति पर कार्य कर रहे हैं । इसलिये वे नेस्ट्राडॉमस की किताबो में पोप की बातें विशेष रुप से करते हैं । वे लोग पोप को एक मेमने के साथ दिखाते हैं जोकि उनकी नजर में शाँती और सहृदयता का प्रतिक हैं । वे लोग पश्चिमी भविष्यवक्ताओं की चुनी हुई भविष्यवाणियों को प्रकाशित करवाने में लगे हैं और कहते हैं कि उन्हौने प्रलय की बात की थी जो अब बस होने ही वाली हैं । वे 'बाईबल' की बात करते हैं जिसमें महाविनाश की बात वे जोरशोर से करते हैं ।

आंतकवादी घटना के जवाब में छिड़ा विश्वयुध्द इसाईयत के अस्तित्व का युध्द बन जाये, यही उनकी रणनिति हैं । क्योंकि वे जानते हैं कि कोई भी आतंकवादी घटना होने पर उसका जवाब देना उनके लिये आवश्यक होगा और नतीजतन विश्वयुध्द छिड़ना ही हैं । इस तरह वे लोग 'इस्लाम बनाम इसाई' धर्मयुध्द को चित्रित करने में लगे हैं । ईश्वर ना करें कि कभी विश्वयुध्द छिड़े परन्तु अगर युध्द छिड़ा तो उसके केन्द्रबिन्दु के रुप में एसी ही आतंकवादी गतिविधि ा होगी और इसाईयत के बचाव के लिये पश्चिमी देश युध्द कर रहे हैं, एसा प्रचार किया जायेगा । इससे पहलकर्ता और दोषारोपण के लिये सबकी उंगली आतंकवादियो की ओर ही उठेगी ।

भारतीय ज्योतिषियों को ग्रह स्थितियाँ बताकर और गणनाऐं करके ये अवश्य सुनिश्चित करना चाहिये कि इनके फल क्या हो सकते हैं । २१ दिसबर, २०१२ के दिन की ग्रह स्थितियाँ क्या कहती हैं ? प्रलय का जो मतलब पश्चिमी लोग निकाल रहे हैं वो असल में उनका डर हैं अथवा प्रलय सचमुच होगी ? हालाकि एसा नही लगता हैं परन्तु पश्चिम से विचारधारा और मानसिकता का भी आयात होने लगे, एसा भी नही होना चाहिये । दरअसल ये समय भारतीय विद्वानों, बुध्दीजीवियों और ज्योतिषियों के सक्रिय होने का हैं ।